जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात

	पान नं.
● भारतीय जैन संघटना - राष्ट्रीय अधिवेशन	१५
● कर्तव्य की प्रेरणा देता गणतंत्र	१९
● जीवन की पावरफुल बातें	२१
● श्री. संतोषजी कटारिया CMAI चे प्रेसिडेंन्ट	२३
● नूतन वर्ष	२४
● कव्हर तपशील	२५
● आओ : दुर्ध्यान छोडें - १) अज्ञान ध्यान	३१
● स्तवन : मीठे मीठे बोल	३४
● ॲड. एस. के. जैन - अमृत महोत्सवी वर्ष	३५
● सुविचार	३८
● मराठी साहित्य सम्मेलन - दिल्ली	४३
● सुर्यदत्त ग्रुप - वैश्विक शांती पुरस्कार	४४
● जैन स्वतंत्रता सेनानियों के दान प्रसंग	४५
● जीन शासन के चमकते हीरे - श्री हरिभद्रसूरि	४८
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	५५
● छोटीसी बातें	५८
● ऐसी हुई जब गुरु कृपा : घौंसले मत बिखेर	५९

	पान नं.
● "अभय प्रभावना" संग्रहालय, ज्ञान केन्द्र, पुणे	६३ ते ७०
● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन	७१
● हाऊस वाईफ काहीच करत नाही ?	७३
● Passward - पासवर्ड	७४
● जीवन बोध : लक्ष्मी बडी या सरस्वती	७५
● हास्य जागृति	७७
● अकेलेपन को दूर भगाएँ	८३
● क्रोध दुर्बलता है	८५
● वैराग्य वाणी	८७
● ताजा भोजन या बासी भोजन	८९
● नफरत V/S प्यार	९५
● सम्राट का तप और संकल्प	९६
● उदरं भरणं - मनं तृप्तं ? समाधान प्राप्तं	९८
● शंका समाधान	१००
● जागृत विचार	१०१

- जीवन की सफलता : एकाग्रता १०२
- जितो पुणे – नवीन कार्यकारिणी १०८
- ऋषी आनंदवन – हडपसर ११०
- जेएटीएफ पुणे – हॉस्टेल भूमीपूजन १११
- एनएनजेबी (जैन गुरुकुल) – चांदवड ११२
- समय का नियोजन ११३
- दी पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे ११५
- श्री. मितेश कोठारी – ॲवार्ड ११५
- श्री धवल शहा – पुरस्कार ११६
- श्री. प्रवीणजी लुंकड – पुरस्कार ११७
- एक है तो सेफ है ११७
- 'धर्म' शब्दाचा डंका वाजला पाहिजे ११९
- सुरक्षा : ABC जैसी सरल है १२१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. • Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

कर्त्तव्य की प्रेरणा देता गणतंत्र

लेखक : डॉ. दिलीप धींग (साहित्य वारिधि) (पूर्व निदेशक अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र)

जब हम गणतंत्र की बात करते हैं तो हमें सिर्फ अपने ही बारे में नहीं सोचकर, सबके लिए सोचना और उसके अनुसार कार्य और व्यवहार करना होगा। जब कोई घोर स्वार्थ के वशीभूत हो केवल अपने ही हित के बारे में सोचता है, तब गणतंत्र की मूल भावना नष्टप्राय हो जाती है। अपने स्वार्थ के लिए, दूसरों के हितों पर या लोकहित पर कुठाराघात करने से न सिर्फ गणतंत्र, अपितु सामान्य मानवीय-नैतिक मानदंडों की भी अवहेलना होती है। गणतंत्र में एक सामुदायिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और इससे भी आगे उदात्त मानवीय भावना और चेतना का विकास करना होता है। मैं सबका और सब मेरे। एक सबके लिए और सब एक के लिए। सब अपना-अपना विकास करें किन्तु दूसरों के विकास में बाधक बनकर नहीं। वस्तुतः सच्चा विकास वही है जो सर्वोदय और सर्वोत्कर्ष का कारण बनें। दूसरों को नुकसान पहुँचाकर की जाने वाली तरक्की स्थायी और फलीभूत नहीं हो सकती। गणतंत्र की मुख्य प्रेरणा यह है कि हम अपने जीवन और जीवन-कार्यों को राष्ट्र और मानवता को समर्पित करते हुए आगे बढ़ें।

देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद भारत भाग्य विधाताओं ने एक समर्थ, शक्तिशाली और खुशहाल राष्ट्र के निर्माण के लिए लम्बे विचार-विनिमय और कठिन परिश्रम से संविधान का निर्माण किया, जिसे २६ नवम्बर १९४९ को पारित व स्वीकृत किया गया। २६ जनवरी १९५० को इसे लागू करने के साथ ही हमारा देश एक सर्व प्रभुसत्ता सम्पन्न प्रजातंत्रीय राष्ट्र बना। संविधान ने हर एक नागरिक को विश्वास, श्रद्धा, उपासना, अभिव्यक्ति आदि हर प्रकार की स्वाधीनता और समानता प्रदान की और समानता का अधिकार दिया। जाँत-पाँत, स्त्री-पुरुष, ऊँच-नीच आदि किसी प्रकार का कोई भेद नहीं रखा। अब प्रश्न यह है कि हम अपने अधिकारों का सदुपयोग कितना करते हैं। संविधान में नागरिकों के मूल कर्त्तव्य भी बताए गए हैं। अनुच्छेद ५१ (अ) के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य होगा कि वह-

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र-ध्वज और राष्ट्र-गान का आदर करे।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखे।

(घ) देश की रक्षा करें और आहवान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और भ्रातृत्व भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो. ऐसी प्रथाओं का परित्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।

(च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे।

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद, ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे एवं हिंसा से दूर रहे।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के

सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की ऊँचाइयों को छू ले।

आज हम अधिकार की ही बात करते हैं, अधिकार की भाषा बोलते हैं, किन्तु कर्त्तव्यों के प्रति बहुत बेपरवाह हो गये हैं। पहले अधिकार की बात करने एवं केवल अधिकार की बात करने से हम हमारी एवं दूसरों की अपेक्षाओं पर कैसे खरे उतरेंगे? पहले कर्त्तव्य की सोचें और उसे भली-भाँति निभाएँ। वर्धमान महावीर कहते हैं अकिरियं परिवज्जए - हम अकरणीय कार्यों का, अकर्त्तव्य का परिवर्जन करें। व्यर्थ की बातों से जानकर भी अनजान बनें। कर्त्तव्य-पालन में सजगता और अधिकार प्रयोग में विवेक, इस बात का ध्यान रखकर स्व और सर्व का उत्कर्ष करें। उत्तराध्ययन-सूत्र के अनुसार ''सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं'' अर्थात् सभी सुकृत्य मनुष्यों के लिए अच्छा फल लाने वाले होते हैं।

हम बहुत जोर-शोर से स्वतंत्रता और गणतंत्र की रजत, स्वर्ण और हीरक जयन्तियाँ मना चुके हैं। देश के सर्व प्रभुसत्ता सम्पन्न होने के लगभग सात दशक बाद भी नित नई बाधाएँ प्रगति की गति को थाम लेती हैं। विज्ञान-चेतना और शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद तरह-तरह के अपराध, अत्याचार, हिंसा, तोड़फोड़ और दुष्कर्म की घटनाएँ लोक और लोकतन्त्र को कमजोर व अभिशप्त करती हैं। बेहतर सुखद भविष्य के लिए हमें अतीत से प्रेरणा लेकर तथा वर्तमान की समीक्षा कर भविष्य सुदृढ़ बनाना है। कभी-कभी लगता है कि हमने स्वतंत्रता का उपयोग कम, उपभोग ज्यादा किया। परिणामस्वरूप स्वच्छंदता बढ़ गई। अब सर्वत्र अनुशासन और आत्मानुशासन की आवश्यकता है।

ऐसा नहीं हुआ कि हमने कोई फासला तय नहीं किया। किन्तु कुछ स्थितियाँ, परिस्थितयाँ और घटनाएँ ऐसी होती रहीं, जिससे यूँ लगने लगता है कि दो कदम बढ़ें और तीन कदम पीछे चल पड़े । इसकी एक वजह हमारी त्रुटिपूर्ण विकास की अवधारणा भी है। कुछ बुनियादी समस्याएँ अभी भी अनसुलझी पड़ी हैं और कई नई समस्याएँ नई-नई शक्लों में हमारे सामने आ खड़ी हुई हैं। समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं की किसी छोटी-सी भूमिका की भी परवाह किये बिना दूसरों पर, शासन व प्रशासन पर दोषारोपण की प्रवृत्ति भी अवरोधक बन जाती है। हम समाज, राष्ट्र एवं दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र के अंग हैं। हम दूसरों से भरपूर अपेक्षाएँ रखते हैं, किन्तु स्वयं दूसरों की अपेक्षाओं पर कितना खरा उतरते हैं, यह विचारणीय प्रश्न है। इस सम्बन्ध में यहाँ मेरी ही काव्य-पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ-

किससे अपेक्षा रखें हम, किसकी प्रतीक्षा करें हम ?
संसार उनके साथ है अविराम जिनके हैं कदम।
अभीत सबका मीत जिसने स्वयं की ली शरण।
सिद्धियाँ और सफलताएँ चूमती उसके चरण।

राष्ट्र को शक्तिशाली, आत्म निर्भर और सुखी-समृद्ध बनाने के लिए हमें यानी प्रत्येक नागरिक को सुशिक्षित, सुसंस्कारित, निष्ठावान और समर्थ बनना पड़ेगा। ऐसी सामर्थ्य कोरी बाहरी शिक्षा से हासिल होने वाली नहीं है। आज सर्वाधिक जरूरत है हमारे भीतर विद्यमान नैतिक-शक्ति के जागरण की। इसके लिए उच्चतर उज्ज्वल आचरण और चरित्र की साधना करनी होगी। सदाचार, ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता, सेवा, करुणा जैसे सद्गुण नागरिक-जीवन के अंग हो जाए तो वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः 'विश्व-गुरु' और 'स्वर्ण-चिड़िया' का विरूद प्राप्त कर लें।

बार-बार ये प्रश्न सामने आते हैं कि राष्ट्र का सामान्य नागरिक सुखी, सम्पन्न व सन्तुष्ट नहीं है। गरीबी, अशिक्षा, असंस्कार, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, बीमारी, हिंसा, आतंक आदि समस्याओं के बीच कैसे जनसामान्य सामान्य महसूस करेगा? सारी समस्याएँ जनतांत्रिक व्यवस्था की विद्यमानता में पनप रही है तो

इसका समाधान भी इस व्यवस्था की मूल ईकाई 'जन' के पास ही है। जनता अच्छाइयों और अच्छे व्यक्तियों का साथ दें। योग्य व्यक्तियों को चुनें। कर्त्तव्यपरायण बनें। देश के लिए त्याग करना सीखें। व्यर्थ के झगड़े-झमेलों को विराम देकर नये युग, नई रोशनी के लिए कमर कसें। रामधारीसिंह दिनकर के शब्दों में-

सेनानी! करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है।
ये नखत अमा के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है।

गणतंत्र की इस पुनीत वेला में हर एक नागरिक को यह संकल्प करना है कि वह कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे राष्ट्र की गरिमा, भारतीय संस्कृति और प्रकृति को आँच आए। हमारा गणतंत्र विशाल ही नहीं, परिपक्व भी है। यह हमारी अपेक्षाओं, आवश्यकताओं को पूरा करने में पूर्ण समर्थ है। बशर्ते हम गणतंत्र की भावनाओं के अनुरूप निष्ठा से कर्तव्य की डगर पर आगे बढ़ते रहें। ●

जीवन की पावरफुल बातें

लेखक : राष्ट्रसंत श्री चन्द्रप्रभ

जीवन एक उत्सव है, इसे प्रेम से मनाइए।
जीवन एक गीत है, इसे जी-भर गाइए।
जीवन एक संघर्ष है, जी-जान से सामना कीजिए।
जीवन एक सपना है, इसे प्यार से साकार कीजिए।

जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल संयोग बनाना तो 'पार्ट ऑफ लाइफ' है, पर प्रतिकूल संयोग बन जाने पर भी अपने आपको खुश और तनावमुक्त रखना निश्चय ही 'आर्ट ऑफ लाइफ' है।

जो ताला चाबी को एक ओर घुमाने से बंद होता है, वही दूसरी ओर घुमाने से खुल भी जाता है।
हम अपने विचार, वाणी और व्यवहार को इस तरह घुमाएँ कि रिश्तों के बंद पड़े ताले फिर से खुल जाएँ।

रास्ते में मंदिर मिल जाए और प्रार्थना न करें तब भी चल जाएगा, पर रास्ते से गुजरते हुए एंबुलेंस नजर आए तो उसे देखकर दुआ जरुर करें, शायद आपकी दुआ से उसका जीवन बच जाए।

जीवन को चाहे हँसकर जियो चाहे रो कर, जीना तो होगा। जब जीवन को खुशी से जिया जा सकता है तो फिर आँसुओं में डूबकर क्यों मरा जाए। हर हाल में खुश रहिए, स्वर्ग का आनंद आप जीते-जी उठा लेंगे।

हँसते हुए परिस्थिति का सामना करने की आदत डालिए। पत्नी कहे - जानवर; तो बुरा मत मानिए, कहिए - तूने ठीक कहा भाग्यवान ! तू मेरी जान, मैं तेरा वर, दोनों मिले तभी तो हुए जानवर।

गुस्से की हालत में कोई फैसला मत कीजिए और खुशी की हालत में कोई वादा, क्योंकि दोनों ही स्थितियों में या तो घाटे का सामना करना पड़ेगा या पछताने का।

आपके पास और कोई फॅक्ट्री हो न हो, पर ये तीन फैक्ट्रियाँ जरुर खोलिए - दिमाग में आइस फैक्ट्री। दिल में लव फैक्ट्री और जुबान में शुगर फैक्ट्री। आपके जीवन की समृद्धि खुद-ब-खुद बढ़ती जाएगी।

दो दिन के लिए बुखार आ जाए तो शरीर की आधी ताकत खतम हो जाती है। अगर हम बेहिसाब गुस्सा करते रहते हैं, तो क्या इससे हमारी मानसिक शक्ति खतम नहीं होगी ?

किसी को ऐसे कड़वे शब्द मत बोलिए कि रिश्तों का शीशा टूट जाए। कड़वी जबान से रावण ने अपने भाई को खो दिया था, पर मीठी जबान से विभीषण ने राम को भी अपना बना लिया था। ●

समाजाची आवड, समाजाची निवड
जैन जागृति

गारमेन्ट उद्योगातील प्रसिद्ध ब्रँन्ड ''पेपरमिंट'चे M.D.
श्री. संतोषजी कटारिया – CMAI च्या प्रेसिडेंट पदी बिनविरोध निवड

पुणे येथील गारमेन्ट उद्योगातील प्रसिद्ध नाव पेपरमिंट ब्रँन्डचे M.D. श्री. संतोषजी मिठूलालजी कटारिया यांची CMAI - Clothing Manufactures Association of India चे प्रेसिडेंट म्हणून निवड झाली आहे. CMAI चा ६१ व्या वार्षिक जनरल मिटींग मध्ये श्री. संतोषजी कटारिया यांची पुढील २ वर्षाकरीता बिनविरोध निवड करण्यात आली आहे. गत ६१ वर्षामध्ये पहिल्यांदाच हे अध्यक्ष पद मुंबई शहराच्या बाहेर गेलेले आहे व पुण्याला हे पद पहिल्यांदा मिळालेले आहे.

CMAI ही भारतीय गारमेन्ट उद्योगातील सर्वांत प्रातिनिधिक संघटना आहे. ज्याचे ५००० पेक्षा जास्त सदस्य आहेत आणि भारतातील २५,००० पेक्षा जास्त किरकोळ विक्रेत्यांना सेवा देतात. तिचे सदस्यत्व उत्पादक, निर्यातदार, ब्रँड आणि सहायक उद्योग यांचा समावेश आहे.

एकसष्ट वर्षांपूर्वी स्थापन झालेल्या CMAI ने उद्योगाच्या विकासासाठी मोठे योगदान दिले आहे. १९७८ मध्ये CMAI ने परिधान निर्यात प्रोत्साहन परिषद AEPC ची निर्मिती केली. CMAI ला भारत सरकारकडून निर्यातदारांना सर्टिफिकेट ऑफ ऑरिझिन (नॉन प्रेफरेंशियल) जारी करण्यासाठी देखील अधिकृत केले आहे.

१९८२ मध्ये देशभरातील किरकोळ विक्रेते, वितरक आणि एजंट यांच्याशी देशांतर्गत गारमेंट

उत्पादकांना जोडण्यासाठी राष्ट्रीय गारमेंट मेळावा आणि प्रादेशिक गारमेंट मेळावे स्थापन करण्यासाठी पुढाकार घेणे हे CMAI चे आणखी एक मोठे योगदान आहे.

आज CMAI ही एकमेव भारतीय संघटना आहे जी संपूर्ण भारतीय गारमेंट उद्योगाचे प्रतिनिधित्व करते आणि आंतरराष्ट्रीय गारमेंट महासंघाचे मुख्यालय नेदरलँड्स आणि चीन मधील आशियाई गारमेंट महासंघाचे मुख्यालय यासारख्या प्रतिष्ठित आंतरराष्ट्रीय मंचांवर व्यापार करते.

श्री. संतोषजी कटारिया हे लहान मुलींचा रेडीमेड कपड्यांचा लोकप्रिय ब्रँन्ड ''पेपरमिंट'चे एम.डी. आहेत. पेपरमिंट हा भारतातील सर्वांत मोठा व नावाजलेला ब्रँन्ड म्हणून प्रसिद्ध आहे. १९८४ साली स्वारगेट येथे लहान जागेत सुरु झालेला गारमेंट उद्योग आज अनेक फॅक्टरीत परिवर्तन झालेले आहे. सुमारे १२०० लोकांना रोजगार निर्माण झाला आहे. २०१० मध्ये बारामती येथे भव्य फॅक्टरी सुरु केली. भारतातील सर्व मॉल संस्कृतीमध्ये पेपरमिंट ने आपला ठसा उमटवला आहे. संतोषजी यांचे बंधु श्री. राजेंद्रजी व श्री. कमलेशजी या उद्योगात कार्यरत आहेत. अभिनंदन ! ●

Secret of the Day - 1st January

New Year : नूतन वर्ष

लेखक : आचार्य विजय रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा.

गाड़ी व्यक्ति के पास पुरानी हो सकती है अथवा नयी गाड़ी होने के बाद भी कुछ समय में वह पुरानी हो जाती है परन्तु समय ?

वह तो मनुष्य को जब भी मिलता है नया ही मिलता है।

'पुराना' होने का दुर्भाग्य कभी समय के नसीब में नहीं होता।

फिर भी, मन ?

वह समय को भी तीन विभागों में विभाजित कर बैठा है। अतीतकाल, अनागतकाल और वर्तमानकाल ! और मन के इस विभागीकरण के कारण ही नूतन वर्ष का दिन मनुष्य के जीवन के आंगन में आकर उपस्थित होता है।

इस दिन के लिए मनुष्य के मन में ऐसी धारणा है कि यदि यह दिन शांति से व्यतीत हो गया तो वर्षभर जीवन में शांति रहेगी और इस दिन यदि लाभ हुआ तो वर्षभर लाभ होता रहेगा।

और इस दिन यदि मन अशांत रहा तो वर्षभर मन में अशांति फैली रहेगी और इस दिन यदि मन प्रसन्न रहा तो वर्षभर मन प्रसन्नता का अनुभव करता रहेगा।

इसी मान्यता के कारण मनुष्य इस दिन क्रोध-संघर्ष-क्लेश आदि से बचता रहता है। और प्रसन्नता-स्मित आदि को कायम रखता है।

प्रश्न केवल यह पूछना है मनुष्य से कि नूतन वर्ष के दिन यदि अपशब्द नहीं बोले जाते तो नूतन समय में हमारे मुख से अपशब्द क्यों ?

नूतन वर्ष के दिन यदि हम किसी से संघर्ष नहीं करते तो नूतन समय में सघर्ष क्यों ?

नूतन वर्ष में यदि सब से प्रेमपूर्ण व्यवहार ही किया जाता है तो नूतन समय में सब से मधुर व्यवहार क्यों नहीं ?

संक्षेप में, नूतन वर्ष के अवसर पर यदि अनुचित कुछ भी नहीं किया जाता तो नूतन समय में हम अनुचित व्यवहार से स्वयं को दूर क्यों नहीं रख सकते ?

नूतन वर्ष में यदि शिष्ट आचरण करना चाहिए तो नूतन समय में भी शिष्ट आचरण क्यों नहीं किया जाता ?

याद रखना, किसी भी एक क्षण हमारा जीवन स्थिर हो जाने वाला है, परन्तु जीवन में हमें एक भी क्षण स्थिर नहीं मिलने वाली।

यदि अच्छा करना ही है तो आज के समान कोई श्रेष्ठ क्षण नहीं है और यदि पाप छोड़ना ही है तो वर्तमान क्षण के समान कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं है।

किसी कवि ने यहाँ सुंदर कल्पना की है -

'मोम जैसे श्वास, दिए किसी ने,
और लगाई है चारों ओर आग !'

सूर्यास्त का समय निश्चित है।

अमावस्या का समय निश्चित है।

ज्वार-भाटे का समय निश्चित है, परन्तु जीवन के अस्त का कोई समय निश्चित नहीं है।

नूतन वर्ष को अवश्य मंगलमय बनाइए, परन्तु इसी से संतुष्ट न होकर प्राप्त होने वाले प्रत्येक नूतन समय को भी मंगलमय बनाने हेतु प्रयासशील बनकर ही रहें।

फिर ?

जीवन नहीं, मृत्य भी मंगलमय बन जाएगी। ●

कव्हर तपशील - जानेवारी २०२५

❖ **'अभय प्रभावना' संग्रहालय व ज्ञान केन्द्र**
इन्द्रायणी नदी काठावर पुण्याच्या जवळ 'अभय प्रभावना' या भव्य संग्रहालय व ज्ञान केन्द्रचे उद्घाटन नुकतेच संपन्न झाले. जैन तत्त्वज्ञान आणि भारतीय वारसाची माहिती सांगणारे या सेंटरला प्रत्येकाने सह परिवार आवश्य भेट द्यावी. (लेख पान नं. ६३ ते ७०)

❖ **अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन, दिल्ली**
सरहद, पुणे आयोजित ९८ व्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन दिल्ली येथे २१ ते २३ फेब्रुवारी २०२५ रोजी होत आहे.
(बातमी पान नं. ४३)

❖ **ॲड. एस. के. जैन, पुणे**
ज्येष्ठ विधीज्ञ ॲड. एस. के. जैन यांनी नुकतेच त्यांच्या वयाची पंचाहत्तरी (अमृत महोत्सवी वर्ष) पुर्ण केले आहे. त्या निमित्ताने त्यांच्या कारकिर्दीचा लेख प्रसिद्ध केला आहे. (लेख पान नं. ३५)

❖ **भारतीय जैन संघटना, राष्ट्रीय अधिवेशन**
भारतीय जैन संघटनेचे दोन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन पुणे येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. १५)

❖ **श्री. विजयजी भंडारी, श्री. इंदरजी जैन – सन्मान**
जीतो ॲपेक्सच्या अध्यक्षपदी श्री. विजयजी भंडारी तर जेएटीएफ जीतो ॲपेक्सच्या अध्यक्षपदी श्री. इंदरजी जैन यांची निवड झाल्याबद्दल जीतो पुणे परिवार आणि मित्र परिवाराच्या वतीने १७ डिसेंबर २०२४ रोजी भव्य सत्कार सोहळ्याचे आयोजन केले.
(बातमी पान नं. १०७)

❖ **श्री. संतोषजी कटारिया – CMAI चे प्रेसिडेंट**
गारमेन्ट उद्योगातील प्रसिद्ध ब्रँन्ड 'पेपरमिंट'चे MD श्री. संतोषजी मिठुलालजी कटारिया यांची CMAI चे प्रेसिडेंट म्हणून बिनविरोध निवड झाली. स्वागत स्विकारतांना श्री. संतोषजी आपल्या मातोश्री चंद्रकला व पत्नी सौ. सुचिता समवेत. (बातमी पान नं. २३)

❖ **जेएटीएफ, पुणे – हॉस्टेल भूमीपूजन**
पुण्यातील लुल्लानगर भागात विद्यार्थ्यांसाठी उभारण्यात येणाऱ्या जेएटीएफ पुणे हॉस्टेलचे भूमिपूजन १९ डिसेंबर २०२४ रोजी झाले.
(बातमी पान नं. १११)

❖ **जितो पुणे – नवीन कार्यकारिणी**
जितो पुणे नवीन कार्यकारिणीचा शपथ विधी समारंभ १९ डिसेंबर २०२४ रोजी पुण्यात भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. (बातमी पान नं. १०८)

❖ **श्री. मितेशजी कोठारी, डायग्नोपिन – ॲवार्ड**
डायग्नोपिन चे श्री. मितेशजी प्रफुल्लजी कोठारी यांना लोकमत द्वारा बाकू देशात ''लोकमत ग्लोबल इंडस्ट्री ॲवार्ड'' देण्यात आला.
(बातमी पान नं. ११५) •

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...
जैन जागृति